जीरो बजट आधारित प्राकृतिक खेती

प्रदीप कुमार[1], प्रणवा पांडेय[1], रघुबर साहू[1], राधे श्याम सिंह[1] और **रामकेवल[2]**

"भारत की कृषि वर्तमान समय में अनेक संरचनात्मक चुनौतियों से गुजर रही है। मृदा की उर्वरता में कमी, जल संसाधनों का क्षरण, रासायनिक अवयवों पर निर्भरता आधारित, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन का तीव्र प्रभाव कृषि क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। ऐसे परिदृश्य में जीरो बजट प्राकृतिक खेती एक वैकल्पिक, टिकाऊ एवं कम लागत वाली कृषि प्रणाली के रूप में उभर रही है। यह पद्धति प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, उत्पादन लागत में कमी तथा किसानों की आय वृद्धि जैसे अनेक महत्वपूर्ण आयामों को स्पर्श करती है। भविष्य के कृषि विकास मॉडल में इस पद्धति का महत्व और भी बढ़ने की संभावना है। यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने की दिशा में एक सशक्त पहल के रूप में देखी जा रही है।"

जीरो बजट आधारित प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है, जिसमें किसान बिना रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों अथवा बाहरी महंगे कृषि आदानों का प्रयोग किए प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर खेती करते हैं। इस प्रणाली का मूल उद्देश्य खेती की लागत को न्यूनतम रखना और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से मृदा की उर्वरता एवं फसल उत्पादन को बनाए रखना है।

इस पद्धति में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक एवं प्राकृतिक घटकों जैसे देसी गाय के गोबर एवं गौमूत्र से तैयार घोल, जैविक अपशिष्ट तथा स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जाता है।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त अधिकांश उर्वरक एवं कीट नियंत्रण पदार्थ किसान स्वयं अपने खेत पर तैयार कर सकते हैं, जिससे बाहरी निर्भरता कम होती है और लागत में कमी आती है। इस प्रणाली का मुख्य आधार मृदा में प्राकृतिक जैविक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाना तथा फसल को संतुलित पोषण उपलब्ध करवाना है।

यह पद्धति न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि किसानों की आय में वृद्धि और दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है।

उद्देश्य

जीरो बजट आधाारित प्राकृतिक खेती का मूल उद्देश्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर कृषि करना है। यह पद्धति चार आधार स्तंभों–जीवामृत, बीजामृत, व्हाप्सा और आच्छादन (मल्चिंग)पर आधारित है। इन तकनीकों से मृदा की सूक्ष्मजीव विविधता में वृद्धि होती है, उर्वरता का पुनर्जीवन होता है तथा फसलों की रोग प्रतिरोधक क्षमता सुदृढ़ होती है। इस प्रणाली में बाहरी रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं पड़ती, जिससे उत्पादन लागत अत्यंत कम हो जाती है। इसका दर्शन भारतीय पारंपरिक कृषि ज्ञान, प्रकृति के नियमों तथा आत्मनिर्भर खेती की अवधारणा पर आधारित है।

[1]वीर कुंवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमराव, बक्सर;
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, बक्सर

प्रकृति सर्वोत्तम शिक्षक

इस पद्धति का मानना है कि प्रकृति स्वयं एक संतुलित, स्व-नियंत्रित एवं उर्वर प्रणाली है:

- जंगल बिना रासायनिक खाद, कीटनाशक या अतिरिक्त सिंचाई के भी सघन एवं हरे-भरे रहते हैं।
- खेती को इसी प्राकृतिक मॉडल के अनुरूप विकसित करना इसका मूल उद्देश्य है।

शून्य लागत की अवधारणा

- किसान को बीज, उर्वरक या कीटनाशक बाजार से खरीदने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।
- अधिकांश कृषि आदान खेत एवं आसपास के प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जा सकते हैं।
- गोवंश (विशेषकर देसी गाय) के गोबर एवं गौमूत्र से निर्मित जीवामृत।
- स्थानीय संसाधनों पर आधारित आच्छादन (मल्चिंग)।

देसी बीजों का उपयोग।

इससे खेती की आर्थिक निर्भरता घटती है और जोखिम कम होता है।

जैविक संतुलन एवं मृदा जीवन पर बल

यह पद्धति रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग का विरोध करती है, क्योंकि वे मृदा की जैव प्रणाली को प्रभावित करते हैं। इसका उद्देश्य, मृदा में सूक्ष्मजीवों एवं केंचुओं की संख्या बढ़ाना, मृदा को 'जीवित' एवं सक्रिय बनाना एवं पोषक तत्वों के प्राकृतिक चक्र को पुनर्स्थापित करना है।

भावी संभावनाएं

देश-विदेश में जैविक एवं रसायनमुक्त उत्पादों की मांग निरंतर बढ़ रही है। यदि प्राकृतिक खेती उत्पादों को प्रमाणन, ब्रांडिंग एवं कृषि प्रसंस्करण से जोड़ा जाए, तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नए अवसर प्रदान कर सकता है। प्राकृतिक खेती आधारित क्लस्टर, किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) एवं सहकारी संस्थाएं इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। समुचित नीतिगत सहयोग, वैज्ञानिक शोध, किसान प्रशिक्षण एवं सुदृढ़ विपणन तंत्र के माध्यम से जीरो बजट प्राकृतिक खेती कृषि स्थिरता, खाद्य सुरक्षा एवं किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने की दिशा में अत्यंत आशाजनक सिद्ध हो सकती है।

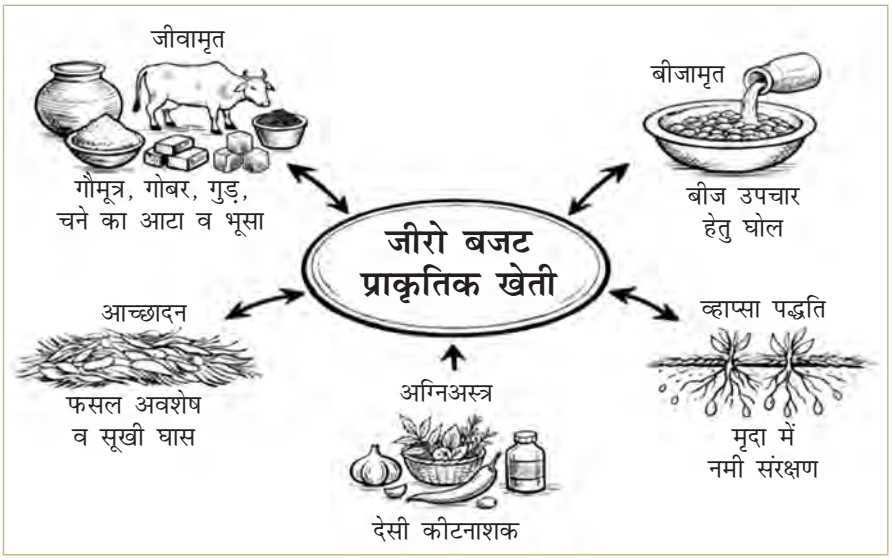

रसायनमुक्त घटक बनाएं भूमि को उपजाऊ एवं टिकाऊ

पौधों की स्वपोषण क्षमता

इस पद्धति के अनुसार पौधों में स्वयं पोषक तत्वों को अवशोषित एवं संतुलित करने की प्राकृतिक क्षमता होती है। जीवामृत जैसी तकनीकें इस क्षमता को सक्रिय एवं सुदृढ़ करती हैं।

स्थानीय संसाधनों का उपयोग

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत बाहरी आदानों पर शून्य निर्भरता रहती है। इस प्रणाली के अंतर्गत स्थानीय बीज, स्थानीय पशुधन, स्थानीय जलवायु, स्थानीय कृषि ज्ञान का ही उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य खेती को आत्मनिर्भर, क्षेत्र विशिष्ट एवं प्राकृतिक परिवेश के अनुरूप बनाना है।

मिश्रित, बहु-फसली एवं विविधतापूर्ण कृषि

विविध फसलों का समावेश जैव विविधता बढ़ाता है, जोखिम कम करता है तथा भूमि की उर्वरता को बनाए रखने में सहायक होता है। इस प्रकार, जीरो बजट प्राकृतिक खेती का मूल दर्शन प्राकृतिक संतुलन, आत्मनिर्भरता एवं दीर्घकालिक कृषि स्थिरता पर आधारित है।

कृषि स्थिरता के लिए भूमिका

जीरो बजट प्राकृतिक खेती कृषि को दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसकी प्रमुख भूमिकाएं इस प्रकार हैं:

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषक तत्व चक्र का सुदृढ़ीकरण

लगातार रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग ने मृदा की संरचना तथा जैविक क्षमता को कमजोर किया है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती मृदा में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ाने, जल धारण क्षमता सुधारने तथा सूक्ष्मजीव गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में सहायक है। इससे पोषक तत्वों का प्राकृतिक चक्र पुनर्स्थापित होता है और मृदा

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के लाभ

- **लागत में कमी:** रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अभाव में उत्पादन लागत घटती है। स्थानीय संसाधनों के उपयोग से आर्थिक सुदृढ़ता बढ़ती है।
- **जल संरक्षण:** प्राकृतिक विधियों से मृदा की जलधारण क्षमता बढ़ती है। सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस पद्धति से जल एवं ऊर्जा की आवश्यकता में 50-60 प्रतिशत तक कमी संभव है।
- **मृदा उर्वरता में वृद्धि:** देसी गाय के गोबर एवं गौमूत्र से तैयार जैविक घोल मृदा की उत्पादकता बढ़ाते हैं।
- **स्वास्थ्य लाभ:** रसायनमुक्त उत्पादन से खाद्य उत्पाद अपेक्षाकृत सुरक्षित एवं पौष्टिक होते हैं।
- **जैव-विविधता संरक्षण:** यह पद्धति पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने एवं लाभकारी जीवों के संरक्षण में सहायक है।

दीर्घकाल तक उपजाऊ बनी रहती है। यह भविष्य की जलवायु सहिष्णु कृषि का आधार बन सकती है।

जल संरक्षण एवं संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

इस पद्धति में व्हाप्सा एवं मल्चिंग जैसी तकनीकों के प्रयोग से सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। यह उन क्षेत्रों में विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होती है, जहां वर्षा अनियमित है तथा भूजल स्तर निरंतर गिर रहा है। भविष्य में संभावित जल संकट को देखते हुए यह प्रणाली एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है।

रासायनिक निर्भरता में कमी

देश में उर्वरक सब्सिडी का बोझ निरंतर बढ़ रहा है। प्राकृतिक खेती के विस्तार से रासायनिक उर्वरकों के आयात एवं सब्सिडी पर निर्भरता कम हो सकती है। इससे सरकारी राजकोषीय भार में कमी आएगी तथा कृषि अधिक आत्मनिर्भर बनेगी।

नीतिगत समर्थन

प्राकृतिक खेती को हाल के वर्षों में विभिन्न राज्य सरकारों-आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश एवं महाराष्ट्र द्वारा प्रोत्साहन दिया गया है। केंद्र सरकार भी प्राकृतिक खेती को राष्ट्रीय कृषि नीति के अंतर्गत महत्व प्रदान कर रही है। अनुसंधान संस्थानों द्वारा इसके प्रभावों का वैज्ञानिक मूल्यांकन एवं क्षेत्र-विशिष्ट अनुशंसाएं विकसित करने की दिशा में प्रयास जारी हैं।

प्रमुख चुनौतियां

- सभी फसलों एवं सभी कृषि जलवायु क्षेत्रों में समान परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं।
- प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में संभावित कमी की आशंका।
- किसानों द्वारा दीर्घकालिक निरंतरता बनाए रखना एक चुनौती।
- वैज्ञानिक समुदाय एवं किसानों के बीच संवाद अंतराल को कम करने की आवश्यकता।

यदि इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान किया जाए, तो प्राकृतिक खेती देश की मुख्य धारा कृषि प्रणाली का सशक्त विकल्प बन सकती है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में महत्व

भारत में अधिकांश किसान छोटे एवं सीमांत वर्ग के हैं, जिनके लिए बढ़ती उत्पादन लागत एक गंभीर चुनौती है। इस संदर्भ में जीरो बजट प्राकृतिक खेती उत्पादन लागत घटाकर लाभांश बढ़ाती है, बाहरी कृषि आदानों पर आधारित ऋण निर्भरता को कम करती है एवं प्राकृतिक उत्पादों के लिए उच्च मूल्य प्राप्त करने में सहायक होती है। यदि मूल्य श्रृंखला एवं विपणन तंत्र को सुदृढ़ किया जाए, तो यह पद्धति किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इस प्रकार, जीरो बजट प्राकृतिक खेती न केवल कृषि स्थिरता को सुदृढ़ करती है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी किसानों के लिए एक व्यवहार्य एवं दीर्घकालिक समाधान प्रस्तुत करती है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती की प्रक्रिया

- **बीज चयन एवं उपचार:** रोगमुक्त देसी बीज का चयन कर बीजामृत से उपचार।
- **उर्वरक प्रबंधन:** गोबर, गौमूत्र एवं अन्य प्राकृतिक अवयवों से निर्मित घोल का प्रयोग।
- **रोग एवं कीट प्रबंधन:** रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर जीवामृत एवं अन्य जैविक विधियां।
- **आच्छादन (मल्चिंग):** फसल अवशेषों से भूमि को ढककर नमी संरक्षण एवं खरपतवार नियंत्रण।
- **निरंतर निगरानी:** फसल की नियमित देखभाल एवं अवलोकन।

शून्य बजट प्राकृतिक कृषि के प्रमुख सिद्धांत

- **बीजामृत:** देसी गाय के गोबर एवं गौमूत्र से तैयार घोल, बीज उपचार हेतु।
- **जीवामृत:** मृदा में सूक्ष्मजीव सक्रियता बढ़ाने वाला जैविक घोल।
- **आच्छादन (मल्चिंग):** भूमि की ऊपरी सतह को कार्बनिक अवशेषों से ढकना।
- **व्हाप्सा:** मृदा में नमी एवं वायु के संतुलन द्वारा पौध वृद्धि को प्रोत्साहन। ■

भाकृअनुप की द्विमासिक बागवानी पत्रिका
'फल फूल' मार्च-अप्रैल, 2026 अंक के प्रमुख आकर्षण

- मेंथा की वैज्ञानिक खेती
- रतनजोत का प्राकृतिक खेती में प्रभावी योगदान
- शुष्क शीतोष्ण क्षेत्रों की संजीवनी-सी बकथॉर्न
- स्वास्थ्य समृद्धि हेतु उपयोगी आंवला
- बहुमूल्य औषधीय फल घिंगारू
- एवोकाडो उत्पादन की अपार संभावनाएं
- गुणों से भरपूर खाद्य पादप-पेहटा
- चिरौंजी उत्पादन की संभावनाएं
- अलसी के बहुआयामी मूल्यवर्धित उत्पाद
- हिमालयी स्वदेशी सब्जी-तरड़ी का उत्पादन
- जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रों में उपयोगी-गुच्छी मशरूम
- ग्लैडियोलस की उन्नत खेती
- बेहद उपयोगी फल है आर्टोकार्पस लकूचा
- एप्पल बेर का लाभकारी उत्पादन

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in